Dr. RANJEET KUMAR
Deptt. of History
H.D. Jain College, Ara.

Notes for:- M.A- Sem.-I, CC-3, unit-2

Topic- राजपूतों की उत्पत्ति (Origin of the Rajputs);-

'राजपूत' शब्द संस्कृत के 'राजपुत्र' का विकृत रूप है। 'राजपुत्र' शब्द का प्रयोग, जो पहले राजकुमार के अर्थ में किया जाता था, पूर्व मध्यकाल में सैनिक वर्गों तथा छोटे-छोटे जमींदारों के लिए किया जाने लगा। वस्तु 8वीं शती के के उपरांत 'राजपूत' शब्द शासक वर्ग का पर्याय बन जाता है।

राजपूतों की उत्पत्ति से संबंध अनेक सिद्धांत एवं मत समय-समय पर प्रतिपादित किए गए हैं। इस वर्ग की उत्पत्ति का प्रश्न विद्वानों के बीच अत्यंत विवाद का विषय रहा है। मुख्यतः इस संबंध में दो मत दिए जाते हैं-

(1.) विदेशी उत्पत्ति का मत
(2.) भारतीय उत्पत्ति का मत

विदेशी उत्पत्ति का मत:- कर्नल टॉड के अनुसार, वे शक-कुषाण, तथा हूणों के संतान थे। अनेक यूरोपीय तथा कुछ भारतीय विद्वानों की मान्यता है कि राजपूत भारत के मूल निवासी नहीं थे, बल्कि विदेशी थे। विलियम क्रुक तथा वी.ए. स्मिथ का भी मानना है कि राजपूत विदेशी थे। गुर्जर, जो राजपूत होने का दावा करते हैं, वस्तुतः हूणों के साथ ही भारत आए। कर्नल टॉड के अनुसार 'राजपूत विदेशी सीथियन जाति की संतान होने का भी दावा करते हैं। इस मत का आधार सीथियन तथा राजपूत जातियों की कुछ सामाजिक तथा धार्मिक प्रथाओं

→

→ में समानता है, जो टॉड के अनुसार, इस प्रकार है —

(i) रहन-सहन तथा वेश-भूषा में समानता
(ii) मांसाहार का प्रचलन
(iii) रथों द्वारा युद्ध करना
(iv) यज्ञों का प्रचलन

चूँकि उपर्युक्त प्रथाओं का प्रचलन सीथियन तथा राजपूत दोनों ही समाजों में था, अतः इस आधार पर कर्नल टॉड राजपूतों को सीथियन जाति का वंशज मानते हैं। इसी मत का समर्थन करते हुए कुक ने प्रतिपादन किया है कि तत्कालिन समाज में कई विदेशी जातियाँ निवास करती थी। ब्राह्मणों का बौद्ध आदि नास्तिक सम्प्रदायों से द्वेष था। अतः उन्होंने कुछ विदेशी जातियों को शुद्धि-संस्कार द्वारा पवित्र करके भारतीय वर्ण-व्यवस्था में स्थान प्रदान कर दिया। इन्हीं को 'राजपूत' कहा जाने लगा।

स्मिथ के अनुसार, उत्तर-पश्चिम के राजपूत जातियों - प्रतिहार, चौहान, परमार, चालुक्य आदि की उत्पत्ति शकों तथा हूणों से हुई थी। इसी प्रकार गहड़वाल, चंदेल, राष्ट्रकूट आदि मध्य तथा दक्षिणी क्षेत्र की जातियाँ गोंड, भर जैसी देशी आदिम जातियों की संतान थी। स्मिथ की धारणा है कि - शक-कुषाण आदि विदेशी जातियों ने हिन्दू धर्म ग्रहण कर लिया। वे कालान्तर में भारतीय समाज में पूर्णतया घुलमिल गयी। उन्होंने यहाँ की संस्कृति को अपना लिया। इन विदेशी शासकों को भारतीय समाज में क्षत्रिय का पद प्राप्त/प्रदान कर दिया गया।

मनुस्मृति में इनको 'व्रात्य क्षत्रिय' कहा गया है। इन जातियों के वीरतापूर्वक कृत्यों को उनके दरबारी चारणों ने बहुत बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया तथा उनकी तुलना रामायण और महाभारत के वीरों से की।

→

→ भण्डारकर ने भी विदेशी उत्पत्ति के मत का समर्थन किया है। इनके अनुसार - अग्नि कुल के चार राजपूत वंश - प्रतिहार, परमार, चौहान तथा सोलंकी - गुर्जर नामक विदेशी जाति से उत्पन्न हुए थे। चौहान तथा गुलोहित जैसे कुछ वंश विदेशी जातियों के पुरोहित थे। उन्होंने आगे बताया है कि गुर्जर-प्रतिहार वंश के लोग निश्चयतः 'खजर' नामक जाति के संतान थे, जो हूणों के साथ भारत में आई थी।

पुराणों में हैहय नामक राजपूत जाति का उल्लेख शक, यवन आदि विदेशी जातियों के साथ किया गया है। इससे भी राजपूतों का विदेशी होना सिद्ध होता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि इन विदेशी जातियों को शुद्धि द्वारा भारतीय समाज में सम्मिलित करने के उद्देश्य से ही पृथ्वीराजरासो में अग्निकुण्ड द्वारा राजपूतों की उत्पत्ति बताई गई है। इस कथा के अनुसार जब परशुराम ने क्षत्रियों का विनाश कर दिया, तो शासकों का अभाव हो गया। म्लेच्छों तथा राक्षसों के अत्याचार बढ़ गये। पृथ्वी त्रस्त हो उठी। अतः पृथ्वी के त्रास का हरण करने के लिए वशिष्ठ ने आबू पर्वत पर एक किया जहाँ यज्ञ की अग्निकुण्ड में चार राजपूत कुलों का उद्भव हुआ — परमार, प्रतिहार, चौहान तथा चालुक्य। इस कथा से यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि भारतीय वर्णव्यवस्था-कारों ने विदेशी जातियों को शुद्धि द्वारा भारतीय वर्णव्यवस्था के अन्तर्गत स्थान प्रदान कर दिया था।

(2.) भारतीय उत्पत्ति का मत :- राजपूतों की उत्पत्ति के उपर्युक्त विदेशी सिद्धांत का विरोध- गौरी शंकर, हीराचन्द्र ओझा तथा सी. वी. वैद्य जैसे कुछ भारतीय विद्वानों ने किया है।

→

→ इनकी सम्मति में 'राजपूत' विशुद्ध भारतीय क्षत्रियों के ही संतान थे, जिनमें विदेशी रक्त का मिश्रण बिल्कुल ही नहीं था। इन विद्वानों के प्रमुख तर्क इस प्रकार हैं —

(1.) टॉड ने राजपूत तथा सीथियन जातियों में जिन समान प्रथाओं का संकेत किया है, वह कल्पना पर आधारित है। ये सभी प्रथाएँ भारत की प्राचीन, क्षत्रिय जाति में देखी जा सकती हैं।

(2.) क्रुक के निष्कर्ष की पुष्टि किसी भी ऐतिहासिक साक्ष्य से नहीं होती है। यह विचार कोरी कल्पना की उपज है।

(3.) इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि 'खजर' नामक किसी जाति ने कभी भी भारत के ऊपर आक्रमण किया हो। भारतीय अथवा विदेशी किसी भी ~~साक्ष्य~~ में इस जाति का उल्लेख नहीं मिलता है।

(4.) पृथ्वीराजरासो में वर्णित अग्निकुल की कथा ऐतिहासिक नहीं लगती। इस कथा का उल्लेख ~~रासो~~ रासो की प्राचीन पाण्डुलिपियों में नहीं मिलता है।

इस प्रकार विदेशी उत्पत्ति का मत कल्पना पर अधिक आधारित है; ठोस तथ्यों पर कम। राजपूत शब्द वस्तुतः "राजपुत्र" का ही अपभ्रंश है, जिसका प्रयोग भारतीय ग्रंथों में क्षत्रिय जाति के लिए हुआ है।

पाणिनि की 'अष्टाध्यायी' में राजपुत्र शब्द का प्रयोग "राजन्य" अथवा रक्षक के रूप में हुआ है। महाभारत में विभिन्न प्रकार के अस्त्र-शस्त्र चलाने वाले को "राजपूत" कहा गया है। आठवीं शती के लेखक भवभूति ने कौशल्या को "राजपुत्री" कहा है। उत्तरमध्यकालीन साहित्य में भी "राजपुत्र" शब्द का प्रयोग क्षत्रिय जाति के लिए ही किया गया है।

→ कल्हण की राजतरंगिणी में शाही परिवारों के उत्तराधिकारी को 'राजपुत्र' की संज्ञा प्रदान की गई है। ऐसा प्रतीत होता है कि तुर्कों द्वारा पराजित हो जाने के बाद राजपूतों की राजनैतिक प्रतिष्ठा समाप्त हो गई तथा तुर्कों ने अपमान स्वरूप उन्हें राजपूत कहना प्रारम्भ कर दिया। कालान्तर में यही नाम लोकप्रचलित हो गया। अतः इन विद्वानों के अनुसार राजपूतों को वैदिक क्षत्रियों की सन्तान मानना चाहिए।

ओझा ने राजपूतों को विशुद्ध क्षत्रिय सिद्ध करने हेतु मनुस्मृति से उदाहरण प्रस्तुत किया है। इसमें एक स्थान पर विदित है कि "पौण्ड्रक, चोल, द्रविड़, यवन, शक, पारद, पह्लव, चीन मूलतः क्षत्रिय थे; किन्तु वैदिक क्रियाओं के त्याग तथा ब्राह्मणों से विमुख हो जाने के कारण उनका क्षत्रियत्व समाप्त हो गया। इससे स्पष्ट हो जाता है कि शक-यवन आदि जिन्हें राजपूतों का जनक बताया जाता है; क्षत्रिय ही थे। वस्तुतः प्राचीन क्षत्रिय वर्ग के शासक तथा योद्धा वर्ग के लोग ही 12वीं शताब्दी में राजपूत कहे गए। यदि वे विदेशी होते थे, तो भारतीय संस्कृति एवं भारत देश के प्रति उनमें इतनी अधिक भक्ति कदापि नहीं हो सकती थी।

हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात् से लेकर 12वीं शताब्दी ई० तक का काल उत्तर भारत के इतिहास में सामान्यतः 'राजपूत' काल के नाम से जाना जाता है। 7वीं - 8वीं शती से हमें राजपूतों का उदय दिखाई देने लगता है, तथा 12वीं शती तक आते-आते उत्तर भारत में उनके 36 (छत्तीस) कुल अत्यंत प्रसिद्ध हो जाते हैं। राजपूत बड़े वीर तथा स्वाभिमानी होते थे और साहस, त्याग, देश-भक्ति आदि के गुण कूट-कूट कर भरे हुए थे। परंतु पारस्परिक संघर्ष तथा द्वेष-भाव के कारण वे देश की रक्षा नहीं कर सके तथा देश की स्वाधीनता को उन्होंने विदेशियों के हाथों में सौंप दिया।

स्वयं राजपूत अपने आपको सूर्यवंशी या चन्द्रवंशी प्रमाणित करते हैं। अनेक साहित्य स्रोतों जैसे— हम्मीर महाकाव्य, नवसाहसांकचरित, कुमारपाल चरित, वर्ण रत्नाकर, पृथ्वीराजरासो इत्यादि तथा अनेक अभिलेखीय साक्ष्यों से राजपूतों

→ के इतिहास पर प्रकाश पड़ता है। अनेक राजपूत राजाओं के अभिलेखों में उनके सूर्यवंशी/चन्द्रवंशी क्षत्रियों से सम्बन्ध दिखाए गए हैं। प्रतिहार, राष्ट्रकूट, सिसोदिया तथा चालुक्य अपना संबंध राम या कृष्ण से स्थापित करते हैं।

डॉ॰ दशरथ शर्मा, विश्वंभर शरण पाठक जैसे अनेक विद्वानों ने राजपूत जाति की उत्पत्ति ब्राह्मणों से मानी है। प्रतिहारों, चौहानों, चंदेलों, गुहिलों आदि वंशों के संस्थापक ब्राह्मण ही थे।

इन सभी सिद्धान्तों के अतिरिक्त प्रो॰ बी॰डी॰ चट्टोपाध्याय ने राजपूतों की उत्पत्ति का संबंध अनेक नवीन जातियों की संरचना, क्षत्रिय-स्तर की प्राप्ति के लिए इच्छुक वंशों का उद्भव, सामाजिक संबंधों में स्थानीयता पर बल आदि कारणों से जोड़ा है। नए क्षेत्रों के उपनिवेशीकरण की बहुलता तथा कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था के विस्तार, जिसमें भूमि अनुदानों की विशेष भूमिका रही, के चलते अनेक नए राजवंशों का उद्भव हुआ, जो क्षत्रिय एवं ब्राह्मणों के आदर्शों को अपनाकर राजपूत बने। कुछ लेखों से यह भी पता चलता है कि- ब्राह्मण तथा क्षत्रिय वर्णों के बीच वैवाहिक संबंध होने के फलस्वरूप जो संताने उत्पन्न हुई उन्हें ब्रह्मक्षत्र/ब्रह्मक्षत्रिय कहा गया।

इस प्रकार ऐसा प्रतीत होता है कि राजपूत वंश की उत्पत्ति भारतीय समाज की विविध जातियों तथा जन-जातियों के साथ-साथ उन विदेशी आक्रामक जातियों से भी हुई, जो भारत में बस गई थी और हिन्दू समाज ने जिन्हें आत्मसात् कर लिया था। यही कारण है कि पूर्व मध्यकाल के कई ग्रन्थों में राजपूतों को मिश्रित वर्ण का बताया गया है। इसमें संदेह नहीं कि इस वंश में उच्च वर्णों के साथ-साथ निम्नवर्णों के रक्त का भी मिश्रण था।